बढ़ाने का प्रयास करता है। मृत्युंजय के आग्रह पर वह अपने मुँहबोले भाई श्वेतांक के साथ काशी भ्रमणार्थ निकल पड़ता है। यशोधरा उसे अपनी निकटता से भी प्रभावित नहीं कर पाती है। उधर श्वेतांक और यशोधरा में प्रेम संबंध विकसित हो जाता है। काशी से लौटने के उपरान्त श्वेतांक बीजगुप्त से यशोधरा से अपने विवाह की इच्छा व्यक्त करता है। बीजगुप्त उसकी इच्छा का सम्मान करते हुए मृत्युंजय के समक्ष श्वेतांक एवं यशोधरा के विवाह का प्रस्ताव रखता है जिसे मृत्युंजय अस्वीकार कर देते हैं। वे अपनी कन्या बीजगुप्त के समान धनी सामन्त को ही देना चाहते हैं। बीजगुप्त अपनी सारी सम्पदा एवं सामन्तपद श्वेतांक को दे देता है और और स्वयं अकिंचन भाव से पाटलिपुत्र से निकल जाता है।

उधर कुमारगिरि के निकट रहकर चित्रलेखा के मन में उसके प्रति विरक्ति होने लगती है और बीजगुप्त का प्रबल प्रेम बार-बार स्मरण आने लगता है। कुमारगिरि चित्रलेखा को पाने के लिए षड्यंत्रपूर्वक यशोधरा और बीजगुप्त के विवाह हो जाने का झूठ चित्रलेखा को बताता है। चित्रलेखा यह सुनते ही बीजगुप्त के प्रति निराशाजन्य प्रतिशोध के भाव से भर उठती है और कुमारगिरि के सामने आत्मसमर्पण कर देती है। वासना की आँधी शान्त होने के बाद चित्रलेखा को सत्य का बोध होता है और वह बीजगुप्त के पास वापस लौट आती है किन्तु बीजगुप्त तो अब अकिंचन होकर नगर का त्याग कर रहा है ऐसे में वह भी अपने समस्त ऐश्वर्य त्यागकर बीजगुप्त के चरणों की दासी बन कर नगर का त्याग कर देती है।